HIN3B18b – Littérature hindi / éveil : 19e–20e s.

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850-1885)

नए ज़माने की मुकरी

सब गुरुजन को बुरो बतावै ।
अपनी खिचड़ी अलग पकावै ॥
भितर तत्व न झूठी तेजी ।
क्यों सखि सज्जन नहिं अँगरेजी ॥१॥
तीन बुलाए तेरह आवैं ।
निज निज बिपता रोइ सुनावैं ॥
आँखौ फूटे भरा न पेट ।
क्यों सखि सज्जन नहिं ग्रैजुएट ॥२॥ .../...
रूप दिखावत सरबस लूटै ।
फंदे मैं जो पड़ै न छूटै ॥
कपट कटारी जिय मैं हूंलिस ।
क्यों सखि सज्जन नहिं सखि पूलिस ॥५॥
भीतर भीतर सब रस चूसै ।
हँसि हँसि कै तन मन धन मूसै ॥
जाहिर बातन में अति तेज ।
क्यों सखि सज्जन नहिं सखि अँगरेज ॥६॥
नई नई नित तान सुनावै ।
अपने जाल में जगत फँसावै ॥
नित नित हमैं करै बल-सून ।
क्यों सखि सज्जन नहिं सखि कानून ॥७॥

लखौ किन भारतवासिन की गति

लखौ किन भारतवासिन की गति ।
मदिरा मत्त भये से सोअत है अचेत तजि सब मति ॥
घन गरजै जल बरसै इन पर विपति परै किन आई ।
ये बजमारे तनिक न चौंकत ऐसी जड़ता छाई ॥
भयो घोर अँधियार चहूँ दिसि तामहँ बदन छिपाए ।
निरलज परे खोइ आपुनपौ जागत हू न जगाए ॥
कहा करैं इत रहिकै अब जिय तासों यहै विचारा ।
छोड़ि मूढ़ इन कहँ अचेत हम जात जलधि के पारा ॥

(< भारत जननी नाटक में भारत लक्ष्मी की उक्ति)

उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी "प्रेमघन" **(1855–1922)**

क्षोभ

है कैसी कजरी यह भाई ? भारत अम्बर ऊपर छाई ॥
मूरखता, आलस, हठ के घन मिलि मिलि कुमति घटा घिरि आई ।
बिलखत प्रजा बिलोकत छन छन चिन्ता अंधकार अधिकाई ॥
बरसत बारि निरुद्यमता को, दारिद दामिनि दुति दरसाई ।
दुख सरिता अति वेग सहित बढ़ि, धीरज बिपुल करार गिराई ॥
परवसता तृन छाय लियो, छिति, सुख मारग नहिं परत लखाई ।
जरि जवास जातीय प्रेम को, बैर फूट फल भल फैलाई ॥
छुआ रोग सों पीड़ित नर, दादुर लौं हाहाकार मचाई ।
फेरि प्रेमघन गोबरधनधर ! दौरि दया करि करहु सहाई ॥

चरखे की चमत्कारी

(१)

चला चल चरखा तू दिन रात ।
चलता चरख बनाता निस दिन ज्यों ग्रीषम बरसात ॥

मन मन मंत्र जपा कर मन में सुन न किसी की बात ।
कात कात कर सूत मैनचिस्टर को कर दे मात ॥

टेकुआ का सर साध धनुष रघुबर की लेकर तांत ।
लंका से लंकाशायर का कर बिलम्ब बिन घात ॥

शक्ति सुदर्शन चक्र की दिया हरि ने तुझे दिखात ।
तेरे चलने की चरचा सुनि यूरप जी अकुलात ॥

ज्यों ज्यों तू चलता त्यों त्यों आता स्वराज्य नियरात ।
परतन्त्रता दीनता भागी जाती खाती लात ॥

चलना तेरा बन्द हुआ जबसे भारत में तात ।
दुखी प्रजा तबसे न यहाँ की अन्न पेट भर खात ॥

जो कमात दै देत बिदेसिन बसन काज ललचात ।
दै दै अन्न नैनसुख लेत सिटिन साटन बानात ॥

चल तू जिससे खायँ दुखी भर पेट दाल औ भात ।
सस्ता सुद्ध स्वदेशी खद्दर पहिन छिपावें गात ॥

हिन्दू मुसलिम जैन पारसी ईसाई सब जात ।
सुखी होंय हिय भरे प्रेमघन सकल भारती भ्रात ॥

श्रीधर पाठक (1859-1928)

देश-गीत

जय जय प्यारा भारत-देश
१
जय जय प्यारा, जग से न्यारा
शोभित सारा, देश हमारा
जगत-मुकुट, जगदीश-दुलारा
जग-सौभाग्य, सुदेश
जय जय प्यारा भारत देश
२
प्यारा देश, जय देशेश
अजय अशेष, सदय विशेष
जहाँ न संभव अघ का लेश
संभव केवल पुण्य-प्रदेश
जय जय प्यारा भारत-देश
३
स्वगिक शीश-फूल पृथिवी का
प्रेम-मूल, प्रिय लोकत्रयी का
सुललित प्रकृति-नटी का टीका
ज्यों निशि का राकेश
जय जय प्यारा भारत-देश
४
जय जय शुभ्र हिमाचल-शृंगा
कल-रव-निरत कलोलिनि गंगा
भानु-प्रताप-समत्कृत अंगा
तेज-पुंज तप-वेश
जय जय प्यारा भारत-देश

५

जग में कोटि-कोटि जुग जीवै
जीवन-सुलभ अमी-रस पीवै
सुखद वितान सुकृत का सीवै
रहै स्वतंत्र हमेश
जय जय प्यारा भारत-देश

बलि-बलि जाऊँ

१

भारत पै सैयाँ मैं बलि-बलि जाऊँ
बलि बलि जाऊँ हियरा लगाऊँ
हरवा बनाऊँ घरवा सजाऊँ
मेरे जियरवा का, तन का, जिगरवा का
मन के, मँदिरवा का प्यारा बसैया
मैं बलि-बलि जाऊँ
भारत पै सैयाँ मैं बलि-बलि जाऊँ

२

भोली-भोली बतियाँ, साँवली सुरतिया
काली-काली ज़ुल्फ़ोंवाली मोहनी मुरतिया
मेरे नगरवा का, मेरे डगरवा का
मेरे अँगनवा का, क्वारा कन्हैया
मैं बलि-बलि जाऊँ
भारत पै सैयाँ मैं बलि-बलि जाऊँ